भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001

फ़ाइल् क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2022/34

भारत की "आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आईसीएआर-आई.आई.एस.आर एवं आई.टी.सी.ली. द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 28.06.2022 को "सोयाबीन खेती की उन्नत तकनीक" पर आयोजित ऑनलाइन कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रेस विज्ञप्ति

"आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की कड़ी में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर एवं आई. टी. सी. ली. के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 28 जून को **"सोयाबीन खेती की उन्नत तकनीक"** पर ऑनलाइन कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ज़ूम एप के साथ-साथ संस्थान के यूट्यूब चैनल पर एक साथ प्रसारित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान तथा आई. टी. सी. लिमिटेड से जुड़े 1000 से अधिक प्रगतिशील कृषकों ने भाग लिया। इस अवसर पर अपने प्रारंभिक उद्बोधन में संस्थान की कार्यवाहक निदेशक डॉ नीता खांडेकर ने सोयाबीन की फसल की प्रति इकाई उत्पादकता में वृद्धि हेतु संस्थान द्वारा किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने संस्थान के सोशल मीडिया जैसे युट्यूब चैनल, टेलीग्राम एप्प पर सोया कृषक ग्रुप, फेसबुक पेज एवं इन्स्टाग्राम जैसे चैनल्स के माध्यम से प्रसारित किये जा रहे कार्यक्रम **"ICAR-मध्य भारत समाचार"** के बारे में भी जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया की संस्थान द्वारा किसानों के लिए हर सप्ताह इस कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न अंकों का प्रसारण किया जाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम तकनिकी सत्र में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) डॉ एस.डी. बिल्लोरे द्वारा सोयाबीन की प्रति इकाई वृद्धि हेतु अनुशंसित सस्य क्रियाये, नवीनतम पद्धतियाँ जैसे बी.बी.एफ या रिज फरो पद्धति से सोयाबीन की बोवनी, अनुशंसित पौध एवं कतारों की दूरी, उपयुक्त बीज दर आदि अपनाने की सलाह दी। उन्होंने यह भी कहा कि किसानों को कम से कम 2-3 प्रकार की विभिन्न किस्मों की खेती करनी चाहिए। एक अन्य तकनिकी सत्र में संस्थान के वैज्ञानिक (पौध रोग विज्ञान) डॉ लक्ष्मण सिंह राजपूत द्वारा सोयाबीन की खेती में बीजोपचार के लिए अनुशंसित FIR तरीके की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सबसे पहले बीज को फफूंदनाशक, तत्पश्चात कीटनाशक तथा अंत में जैविक कल्चर (ब्रेडीरायजोबियम/पी.एस.एम.) से उपचारित किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी समझाया कि अनुशंसित बीजोपचार से सोयाबीन को विभिन्न बिमारियों के साथ-साथ कीटों से भी सुरक्षित किया जा सकता हैं। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) डॉ राकेश कुमार वर्मा ने सोयाबीन फसल में खरपतवार

नियंत्रण के लिए विभिन्न विधियों तथा अनुशंसित खरपतवारनाशकों की जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम सत्र में डॉ बी. यु. दुपारे (प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विस्तार) द्वारा तकनिकी हस्तांतरण हेतु संस्थान द्वारा उपयोग की जा रही विभिन्न पद्धतियाँ, सोशल मीडिया जैसे संस्थान के टेलीग्राम एवं व्हाट्सएप चैनल पर प्रगतिशील सोया कृषको के ग्रुप एवं युट्यूब चैनल के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह जारी की जाने वाली साप्ताहिक सलाह, कृषि समाचार तथा छोटे-छोटे विडियो के माध्यम से सोया वैज्ञानिकों द्वारा प्रदत्त जानकारी किसानों तक पहुचाने के प्रयास किये जा रहे हैं, जिसका कृषकों ने लाभ लेना चाहिए।

कार्यक्रम के अंतिम सत्र में श्री राकेश मोहन रावत, सहयोगी प्रबंधक (कृषि सेवाएं) आई.टी.सी.ली ने संस्थान के सहयोग से विगत दो वर्षों से आयोजित की जा रही संयुक्त गतिविधियों की सराहना करते हुए संस्थान के वैज्ञानिक एवं कृषकों का धन्यवाद करते हुए आगे भी इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन हेतु तत्परता दिखाई। कार्यक्रम के अंत में डॉ सविता कोल्हे, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

....

..

ICAR – IISR INDORE